L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A. PART III
PAPER VI (Honours)
Psychology (H)
Topic - Define value,

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant Professor,
Guest Teacher,
V.S.J. College Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumardbg2018@gmail.com

Define value, values, and acquired,

प्रत्येक समाज कुछ आदर्शों पर टिका होता है। सामाजिक जीवन के लिये भी आदर्शों की आवश्यकता होती है। आदर्शों के बिना समाज की प्रगति व परिवर्तन की दिशा निर्धारित नहीं हो पाती है। ये आदर्श बनाते हैं कि हमारी मंजिल क्या है। वास्तव में कुछ ऐसे आदर्श जो अपने सामान्य स्वरूप ही समाज के सदस्य स्वीकार होते हैं। यह देखी जाती है। कि सामाजिक अन्तः क्रिया के दौरान समाज या सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों के प्रति समाज के सदस्यों की एक विशेष दृष्टिकोण पनप जाती है। इन दृष्टिकोणों के आधार पर ही हम यह बात की सामाजिक माप (social measure) करते हैं। कि अमुक वस्तु या सामाजिक घटना अच्छा है या बुरा उचित है या अनुचित समाज के लिये महत्वपूर्ण है। या व्यर्थ इन्हीं विचारों या सामाजिक मापों के आधार पर समाज में कुछ मानदण्ड पनप जाते हैं। और उसी मानदण्ड के आधार पर हम विभिन्न सामाजिक घटनाओं की सामाजिक दृष्टिकोण से कीमत लगाते हैं। अर्थात की उसकी अच्छाई-बुराई महत्व या व्यर्थता का अनुमान लगाते हैं, इस प्रकार विभिन्न सामाजिक घटनाओं के संबंध में सामाजिक अन्तः क्रियाओं के प्रभाव को ही मूल्य (value) कहते हैं। ये किसी एक अमूर्त तथा सामान्य नियम हैं। जो किसी विशेष संस्कृति या समाज में व्यवहार प्रतिमानों से संबंधित होती है। और उसे वह संस्कृति या समाज के सदस्य समाजीकरण प्रक्रिया के द्वारा उत्पन्न

सम्मान देते है। मूल्यों की व्यापक मूल धारणाओं से है। कि एक विशिष्ट आचरण- संहिता अस्तित्व के अंत की स्थिति है। जिसको व्यक्तिगत या सामाजिक रूप से विपरीत आचरण - संहिता अथवा अस्तित्व के लक्ष्य से बेहतर माना जाता है।

किसी भी मूल्य के दो गुण या विशेषताएं है। इन्हें पदार्थ गुण तथा तीव्रता गुण कहते है। पदार्थ गुण का अर्थ आचरण- संहिता का महत्व है। इससे इस बात का संकेत मिलता है। कि उस आचरण संहिता या अस्तित्व के लक्ष्य का क्या महत्व है। इसके और तीव्रता गुण का व्यापक महत्व की मात्रा से है। इस गुण से ज्ञात होता है। कि आचरण संहिता अथवा अस्तित्व अन्त स्थिति कितनी अधिक या कितनी कम महत्वपूर्ण है। जब किसी व्यक्ति के मूल्यों को उनकी तीव्रता के अनुकूल श्रेणीबद्ध किया जाता है। तो इसे व्यक्ति का मूल्य तंत्र कहते है। जैसे- स्वतंत्रता, आनन्द, आत्म- सम्मान, ईमानदारी, आज्ञापालन, समानता आदि मूल्य की वस्तुओं के दिए गए सापेक्ष महत्व के आधार पर मूल्य तंत्र की पहचान की जाती है। (मूल्य के स्रोत)

(1) संस्कृति - मूल्यों अथवा मूल्य तंत्रों का एक मुख्य स्रोत भारतीय संस्कृति में शान्ति, सहयोग, मेल- मिलाप, समानता तथा प्रजातंत्र आदि सामाजिक मूल्य है। इसी तरह पश्चिम संस्कृति में अलग- अलग मूल्य है। ये मूल्य स्थिर या स्थायी नहीं होते रहते है। बल्कि उनमें परिवर्तन होता रहता है। किन्तु वह परिवर्तन बहुत मन्द गति से होता है।

(2) प्रारम्भिक समाजीकरण - मूल्यों अथवा मूल्य तंत्रों के विकास पर प्रारम्भिक समाजीकरण का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे अपने माता- पिता से नाना प्रकार के मूल्यों को अर्जित करते है। माता- पिता बच्चों के लिए मॉडल का काम करते है। अतः बच्चे उनको मॉडल मानकर उनके मूल्यों को सीख लेते है। इसी कारण माता- पिता तथा बच्चों के मूल्यों में काफी

Scanned with CamScanner

समानता पायी जाती है।

(iii) मित्रमंडली समाजीकरण – मूल्यों के एक स्रोत मित्रमंडली समाजीकरण है। इसका अर्थ है कि बच्चे अपने परिवार से बाहर रहकर भी पड़ोसियों, मित्रों आदि के सम्पर्क में रहकर कई तरह के मूल्यों को सीखते हैं विशेष रूप से बच्चे विद्यार्थी के रूप में अपने मित्रों को मॉडल मानकर उनके विचारों एवं व्यवहारों का अनुकरण करते हैं और विभिन्न मूल्यों को अर्जित करते हैं।

(iv) अभिजात समूह :– बच्चे प्रायः अपनी आयु तथा अपने लिंग (sex) के समान बच्चों के समूह में अपना अधिकांश समय गुजारते हैं इसे अभिजात समूह कहा जाता है। इस समूह में विभिन्न संस्कृतियों, समुदायों, जातियों तथा वर्गों के बच्चे शामिल रहते हैं। और उनके मूल्य तंत्र अलग-अलग होते हैं। इसलिए बच्चों को नये-नये मूल्यों को अवसर मिलता है।

(v) संस्कृतिकरण :– मूल्यों तंत्रों के विकास का एक स्रोत संस्कृतिकरण है। इसका अर्थ यह है कि निम्न जाति या निम्न वर्ग के बच्चे उच्च जाति या उच्च वर्ग के मूल्यों को अर्जित करते हैं, तथा अपनी जाति या वर्ग के मूल्यों को छोड़ देते हैं। जैसे – शूद्र बच्चे ब्राह्मणों के मूल्यों को सीखते हैं तथा अपने वर्ग या जाति के मूल्यों को छोड़ देते हैं।

(vi) अपसंस्कृतिकरण ! – अपसंस्कृतिकरण वास्तव में संस्कृतिकरण की उलटी प्रक्रिया है। इसमें उच्च जाति या वर्ग के लोग निम्न जाति या निम्न वर्ग के मूल्य तंत्रों को अर्जित कर लेते हैं। जैसे ब्राह्मण जाति के लोग ऐसे मूल्यों को अर्जित कर लेते हैं। जो हरिजन जाति से सम्बन्ध हुआ करते हैं।

(vii) पश्चिमीकरण :– मूल्यों या मूल्यतंत्र के विकास का एक महत्वपूर्ण स्रोत भारतीय परिवेश का पश्चिमीकरण है। इसका अर्थ यह कि हम अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के मूल्यों को तेजी के साथ अर्जित करते जा रहे हैं। इस्तमाल, रजिस्टर समाचार पत्र

सिनेमा आदि संचार माध्यमों के द्वारा पश्चिमी संस्कृति के मूल्यों को सीखते जाते हैं, और आपना संस्कृति के मूल्यों को भूलते जाते हैं। क्योंकि समाज कुछ आदर्शों पर टिका होता है। सामाजिक जीवन के लिए इन आदर्शों की आवश्यकता होती है। आदर्श के बिना समाज की प्रगति व परिवर्तन की दिशा निर्धारित नहीं हो पाती है। ये आदर्श बताते हैं कि हमारी मंजिल क्या है। वास्तव में कुछ उच्च आदर्श ही अपने सामने स्पष्ट रहने पर समाज के सदस्य क्रियाशील होते हैं। यहीं देखा जाता है कि सामाजिक अन्तःक्रिया के दौरान समाज या सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों के प्रति समाज के सदस्यों का एक विशेष दृष्टिकोण बन जाता है। आधार पर हम इस बात का सामाजिक माप करते हैं कि अमुक वस्तु या सामाजिक घटना अच्छा है या बुरा, उचित है या अनुचित, समाज के लिए महत्वपूर्ण है या नहीं। इन्हीं विचारों या सामाजिक मापों के आधार पर समाज के कुछ मानदण्ड बन जाते हैं और उन मानदण्ड के आधार पर हम विभिन्न सामाजिक घटनाओं की सामाजिक दृष्टिकोण से कीमत लगाते हैं।

Dr. Pramod Kumar Sahu.

Date- 17/07/2020

Scanned with CamScanner